अक्रम यूथ

जुलाई २०१७ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹ १२

लक्ष्मी जी के कायदे

संपादकीय

व्यवहारिक जीवन में हम देखते हैं कि कुछ लोगों के पास बहुत ज्यादा पैसा होता है, जबकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिनके पास दिन-रात की कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी पैसा नहीं होता। इसका क्या कारण हो सकता है? इसके पीछे कौन सा रहस्य होगा? पैसे की ज़रूरत तो हर एक को होती है। फिर भी, पैसा कैसे आता-जाता है उसके गहरे रहस्यों को कोई लौकिक दृष्टि से कैसे समझ सकेगा?

लक्ष्मी का आना-जाना कैसे होता है और लौकिक दुनिया में लक्ष्मी का व्यवहार कैसे करना चाहिए उसकी सही समझ अनुभवी ज्ञानी के अलावा कौन दे सकता है? इस समय के महान ज्ञानीपुरूष दादाश्री का कहना है कि लक्ष्मी, आज के जगत् का केन्द्र बन गई है। अतः लक्ष्मी के प्रति हमेशा मान और विनम्रता रखनी चाहिए। लक्ष्मी का तिरस्कार कभी भी नहीं करना चाहिए। आप अगर धन-लक्ष्मी जी (धन की देवी) को प्रसन्न करना चाहते हैं तो आपको नारायण (हर एक के अंदर रहने वाले भगवान) को प्रेम करना पड़ेगा। लक्ष्मी, वह शाश्वत सत्य नहीं है बल्कि रिलेटिव सत्य है। लक्ष्मी, बुद्धि से/काबिलियत से नहीं आती, वह व्यक्ति के पुण्यकर्म से आती है। लक्ष्मी का आना-जाना लगा ही रहता है, और उसका संचालन कुदरत करती है। शुद्ध और नीति की लक्ष्मी से व्यक्ति का जीवन शांतिमय और आनंदित रहता है। व्यक्ति को वास्तव में अपने हक की ही कमाई करनी चाहिए, अनीति (अणहक) का या अशुद्ध पैसा ग्रहण नहीं करना चाहिए। जब आप अपनी लक्ष्मी का उपयोग शुभ कार्यों में करते हैं, तब वह पुण्यकर्म कहा जाता है।

दादाश्री कहते हैं कि अगर आप अपने जीवन में पैसा-लक्ष्मी जी लाना चाहते हैं तो उनके कायदों का पालन करना पड़ेगा। जीवन की हर एक चीज़ वैज्ञानिक है और अगर आप उसके कायदे तोड़ेंगे तो लक्ष्मी जी ज़रूर आपकी अवगणना करेंगी। तो लक्ष्मी जी के कायदे कौन से हैं?

चलो देखें...

-डिम्पल मेहता

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ५, अंक : ०३
अखंड क्रमांक : ५१
जुलाई २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

email:
akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

Contents

०४) लक्ष्मी जी कैसे मिलेंगी?
०६) दादा की वैज्ञानिक दृष्टि से
०७) Q & A
०८) लक्ष्मी जी का व्यवहार
१०) दादाश्री के पुस्तक की एक झलक
१२) स्वच्छता लक्ष्मी जी को खींच लाती है
१४) ज्ञानी विद यूथ
१६) अक्रम पीडिया
१९) दादा भगवान सचित्र कथा
२०) ठहरो और सोचो!
२२) पज़ल हल करो
२३) समर कैम्प २०१७

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store
Visit : http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth
Download free ebook / PDF versions of all
Akram Youth issues by scanning this QR code

लक्ष्मी जी कैसे मिलेंगी?

"मामी, मम्मी को भी आप ऐसा यम्मी-यम्मी खाना बनाना सीखा देना।" निहार ने खाना खाते हुए मामी से कहा। दो दिन पहले ही निहार अपने मम्मी-पापा के साथ मामा-मामी, नाना, मौसा-मौसी को मिलने और दिवाली मनाने लंदन से आया है।

मामी के हाथों के स्वादिष्ट व्यंजन, नाना का दुलार और मामा के साथ खरीदारी... निहार को तो मज़ा आ गया। आसपास रहने वाले स्वराज, स्वयम् और निशांत के साथ, आते ही दोस्ती भी कर ली है।

स्वराज के घर पर आज सब कैरम खेलने के लिए इकट्ठे हुए हैं। कैरम खेलते-खेलते उसकी नज़र दिवार पर लगी हुई एक चीज़ पर पड़ती है, उसे कुछ अलग सा लगता है, लेकिन वह फिर से खेल में मग्न हो जाता है। उसी दिन शाम को मामी के साथ वह दिवाली की शॉपिंग करने जाता है। उस दुकान पर भी उसे वही चीज़ दिखाई देती है। वह मामी से पूछना चाहता है, लेकिन मामी फोन पर किसी से बातें करने में व्यस्त हैं। वह मामी की बातें खत्म होने का इंतज़ार करता है लेकिन तभी ड्राइवर आ जाता है और वे लोग वहाँ से वापस आ जाते हैं। उस रात वह देर तक उसी चीज़ के बारे में सोचता रहा। दूसरे दिन पटाखे लेने के लिए मामा उसे अपने साथ चलने के लिए कहते हैं। निहार बहुत खुश हो जाता है। जीवन में पहली बार वह पटाखे लेने जा रहा है। उसने अपने पापा को भी

साथ चलने के लिए कहा। वैसे भी उसके पापा को मौसा जी के ऑफिस में काम था इसलिए पहले मौसा जी के ऑफिस से होकर फिर पटाखे लेने जाने का तय हुआ।

मौसा जी के ऑफिस में प्रवेश करते ही उसने सामने वाली दीवार पर फिर से उस चीज़ को देखा। "मामा, मामा यह क्या है?" आखिरकार उसने पूछ ही लिया। "बेटा! वह लक्ष्मीयंत्र है।" मामा ने कहा। "लक्ष्मीयंत्र? वॉट्स दैट?" उसने कौतूहलता से पूछा। "लक्ष्मीदेवी की कृपा है ऐसा समझ ले, यह बंगला, गाड़ी, ऑफिस सब इन से ही मिला है।" मामा के कुछ कहने से पहले ही मौसा जी ने कहा। निहार के मन में विचारों का युद्ध शुरू हो गया। लेकिन तब वह चुप हो गया और पटाखे लेकर घर आ गया।

दूसरे दिन धनतेरस आ गई। शाम को सब तैयार होकर पूजा के कमरे में बैठ गए। तिजोरी में से मामा लक्ष्मीयंत्र, चांदी के सिक्के ले आए और मामी पूजा की सामग्री ले आई। बारी-बारी से सब यंत्र और सिक्कों की पूजा करने लगे। "आप सभी इनकी पूजा क्यों कर रहे हैं?" निहार आश्चर्य से पूछता है। "बेटा, आज के शुभदिन पर इस यंत्र और सिक्कों की पूजा करने से लक्ष्मीदेवी हम पर प्रसन्न होंगी और हमें वैभव एवं समृद्धि देंगी।" मामा ने समझाया। "लेकिन...", निहार आगे कुछ कहे, इससे पहले ही पापा ने इशारे से निहार को चुप रहने के लिए कहा। पूजन के बाद निहार को अपने पास बुलाकर पापा ने कहा, "कहो निहार, क्या पूछना चाहते हो?", "पापा, हमने तो कभी ऐसा पूजन नहीं किया फिर भी हमारे पास पैसे हैं। वहाँ लंदन में मेरे दोस्त भी ऐसा पूजन नहीं करते या लक्ष्मीयंत्र भी नहीं लगाते और उनके पास भी पैसे हैं। उसमें भी मेथ्यु और सुज़ेन तो कितने पैसे वाले हैं!

आपको लगता है कि वे हमसे छिपाकर यह यंत्र लगाते होंगे या पूजन करते होंगे?" अपने मन में चलने वाले विचारों को निहार आखिरकार पापा के सामने रखता है। यह सुनते ही उसके पापा हँस पड़ते हैं। वे कहते हैं, "तू यहाँ मेरे पास बैठ। क्या तुझे पता है कि अपने दादाश्री का इस बारे में क्या कहना है?" "नहीं, पापा", निहार ने कहा। पापा ने कहा ,"अच्छा! तो सुन!

दादाश्री का कहना है कि...

कौन से कायदों का पालन करने से लक्ष्मी जी मिलती हैं ?

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी जी के कायदे कौन से हैं?

दादाश्री : गलत तरीके से लक्ष्मी जी नहीं लेनी चाहिए, वह कायदा। इस कायदे को अगर तोड़ें तो लक्ष्मी जी कैसे खुश रहेंगी? फिर तू लक्ष्मी जी को धोता है न? सभी धोते हैं। वहाँ विलायत में लोग लक्ष्मी जी को धोते हैं क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं दादा, वहाँ कोई लक्ष्मी जी को नहीं धोता।

दादाश्री : फिर भी उन लोगों के पास लक्ष्मी जी आती हैं या नहीं? ऐसे लक्ष्मी जी को धोने से आएँगी क्या? यहाँ हिन्दुस्तान में तो दहीं से भी धोते हैं। लक्ष्मी जी को सब धोते रहते हैं, कोई कम नहीं हैं। मुझे भी लोग पूछते हैं, "आपने लक्ष्मी जी को धोया या नहीं?" मैंने कहा, "किस लिए? हम से जब लक्ष्मी जी मिलती हैं तब हम उन से कह देते हैं कि बड़ौदा में मामा की पोल में छड्डा घर है, जब अनुकूल लगे तब पधारिएगा और जब जाना चाहें तब जाइएगा। आपका ही घर है, पधारिएगा।" इतना हम कह देते हैं। हम विनय नहीं चूकते। तब हम ऐसा नहीं कहते कि, "हमें उनकी ज़रूरत नहीं है।" आप भी घर जाकर रात को कहना कि, "हे लक्ष्मीदेवी जी, जब अनुकूल लगे तब आप मेरे घर आइएगा और जब अनुकूल लगे तब जाइएगा। लेकिन इस घर में आइएगा। आप ध्यान रखिएगा।" ऐसा कह सकते हैं न?

प्रश्नकर्ता : ब्रह्मांड के कायदे कौन से हैं?

आप्तपुत्र : ब्रह्मांड के कई कायदे हैं। दादाश्री ने व्यवहार और निश्चय के लिए कायदे दिए हैं। इस दुनिया में कायदे से ही सबकुछ चल रहा है। यह दुनिया अव्यवस्थित नहीं है, एक्ज़ेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, अगर मैं इन कायदों का पालन न करूँ तो क्या हो जाएगा?

आप्तपुत्र : एक बार एक व्यक्ति ने एक वैज्ञानिक को ललकारा कि मैं गुरुत्वाकर्षण को नहीं मानता। गुरुत्वाकर्षण जैसा कुछ भी नहीं है। ऐसी दलील से वैज्ञानिक चकित रह गया। वैज्ञानिक ने उस व्यक्ति से कहा कि "घर की छत पर जाकर, छत से बाहर सीधे चलो।" क्या हुआ होगा? वह भाई हवा में तैरेगा या गिर जाएगा? वह भाई चाहे गुरुत्वाकर्षण को माने या न माने, लेकिन गुरुत्वाकर्षण तो अपना काम करेगा ही। वह ज़रूर गिर पड़ेगा। इसी तरह से दुनिया के कायदे हैं। आप उन्हें मानो या न मानो, आपका जीवन उन कायदों के अनुसार ही चलेगा।

उदाहरण के तौर पर लक्ष्मी जी का कायदा यह है कि, नकद लक्ष्मी हर ११ वर्षों में बदल जाती है। अतः ११ वर्ष में कोई नई लक्ष्मी नहीं आएगी, अरे! करोड़पति भी भिखारी बन सकता है।

यही कायदा है। आप चाहे मानो या न मानो, वह सच होकर ही रहेगा। लोग अगर पैसा खर्च नहीं करेंगे और जमा करते रहेंगे तो सारा पैसा बेकार जाएगा। हमने ५००-१००० की "नोट-बंदी" का ताजा ही उदाहरण देखा। जिसमें कुछ वर्षों में लक्ष्मी जी बड़े अनुपात में "घर बदलती हैं" वह हमने स्पष्ट रूप से देखा।

इन कायदों को मानने से और उन्हें समझ लेने से आप ज्यादा अच्छी तरह से और योग्यता से संसार चला सकेंगे। अपनी सारी पुस्तकों में दादाश्री ने इन्हीं कायदों के बारे में कहा है।

लक्ष्मी जी का व्यवहार

जहाँ-जहाँ लक्ष्मी की बहुत ही इच्छा की हो, पहले तो उसके प्रतिक्रमण करने चाहिए। मैंने ऐसा कहा, "वह मेरी भूल है। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा खेद रहना चाहिए।" लक्ष्मी जी तो बहुत स्मार्ट हैं, वे तो भगवान की पत्नी हैं, किसी की पत्नी के पीछे पड़ना चाहिए?

ये सभी सेठ लोग लक्ष्मी जी के पीछे पड़ते हैं, तो लक्ष्मी जी भी सामने से आँख मारकर भागती हैं, इसलिए वह खुश हो जाता है कि लक्ष्मी जी मुझे बुला रही हैं इसलिए वह भी लक्ष्मी जी के पीछे भागता है। जैसे ही भागने लगता है, तो लक्ष्मी जी भी ऐसे भागती हैं कि वह गिर जाता है। और जैसे ही घुटने के बल खड़ा होने लगता है वैसे ही लक्ष्मी जी फिर से आँख मारती हैं... ऐसा खेल है।

इससे अच्छा है कि छोड़ो न! लक्ष्मी जी से कहना है कि, आपको जहाँ जाना है वहाँ जाइए मैं तो अपना जो है वही करूँगा, आप आना चाहें तो आइए।

लक्ष्मी अर्थात् नारायण की पत्नी, पत्नी को नहीं पकड़ना चाहिए। नारायण को पकड़ें तो ऑटोमैटिक उनकी पत्नी उनके पीछे आएँगी।

दादाश्री के पुस्तक की एक झलक

जहाँ चिंता है वहाँ लक्ष्मी टिकती है क्या?

प्रश्नकर्ता : ऐसा अगर है, तो फिर लोग कमाने ही नहीं जाएँगे, और चिंता ही नहीं करेंगे।

दादाश्री : नहीं, कमाने जाते हैं वह भी उनके बस में नहीं है न। वे तो लट्टू हैं। ये सभी नेचर जैसे घुमाता है वैसे घूमते रहते हैं, और अहंकार करते हैं कि मैं कमाने गया था। और यों ही चिंता करते हैं। एक-दूसरे का देखकर कि फलां को देखो, बेटी की शादी की कितनी चिंता करते हैं और मैं तो चिंता ही नहीं करता। चिंता ही चिंता में सूख जाते हैं और बेटी की शादी के लिए उनके पास चार आने भी नहीं रहते। चिंता करने वाला पैसे लाएगा कहाँ से? लक्ष्मी जी का स्वभाव कैसा है? जो आनंदी रहता है उसके यहाँ लक्ष्मी जी का वास रहता है। बाकी, चिंता करने वाले के यहाँ वास नहीं रहता। जो आनंदी है, जो भगवान को याद करते हैं उनके यहाँ लक्ष्मी जी आती हैं।

ज्ञानी मोड़ते हैं पॉज़िटिव राह पर

मैं तो पॉज़िटिव बनाना चाहता हूँ। नेगेटिव सेन्स (बुद्धि) लाना ही नहीं चाहता। अगर कोई अच्छा है, तो उस अच्छे को पुष्टि दे देता हूँ। अतः उसका अच्छा इतना प्रकाशमान हो जाता है, इतनी जगह रोक लेता है कि नेगेटिव खत्म ही हो जाता है। अब तक इस जगत् में नेगेटिव से ही टकराव होते आए हैं। लक्ष्मी आने के बाद सुख न मिले, अंदर कुढ़न होती रहती हो तो वह पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी है। वर्ना, सच्ची लक्ष्मी क्लेश नहीं करवाती। यानी लक्ष्मी के तो ऐसे सुंदर गुण हैं!

लक्ष्मी पधारती हैं, नोबल के वहाँ!

ऐसा क्या किया होता है कि श्रीमंत बनते हैं? लोगों की बहुत ज्यादा मदद की हो तब हमारे यहाँ लक्ष्मी आती है। वर्ना लक्ष्मी नहीं आती। देने की इच्छा वाले के यहीं लक्ष्मी आती है। जो नुकसान उठाते हैं, धोखा खाते हैं, नोबिलिटी रखते हैं, उनके यहाँ लक्ष्मी आती है। ऐसा लगता है कि चली गई, लेकिन फिर वहीं आकर रूकती है।

प्रश्नकर्ता : आपने लिखा है कि बड़े मन वाला ही कमाता है। लेन-देन में जो बड़ा मन रखता है वही कमाता है, बाकी संकीर्ण मन वाला कभी भी नहीं कमाता।

Visit : https://goo.gl/smhou7

Download free ebook version of above Book by scanning this QR code

पैसों का व्यवहार

दादाश्री : आधे घिसे हुए चप्पल पहनकर सब घूमते रहते हैं न! मैंने भूलेश्वर में बहुत देखे हैं। सभी को परखा है।

हर तरह से नोबल हो, तो वहाँ लक्ष्मी जाती हैं। किसी पाजी के पास लक्ष्मी जाती होगी?

प्रश्नकर्ता : पुण्य के कारण व्यक्ति धनवान बनता है?

दादाश्री : धनवान बनने के लिए तो पुण्य चाहिए। पुण्य होगा तो पैसे आएँगे।

प्रश्नकर्ता : पैसों के लिए तो ऐसा लिखा है न कि बुद्धि की ज़रूरत पड़ती है।

दादाश्री : नहीं, बुद्धि तो फायदा-नुकसान दो ही दिखाती है। जहाँ जाएँ वहाँ फायदा-नुकसान दिखाती है। बुद्धि पैसा-बैसा नहीं देती। बुद्धि अगर पैसा देती तो भूलेश्वर में तो कितने बुद्धिशाली मुनीम जी रहते हैं। जो चीज़ सेठ की समझ में नहीं आती वह सब उसकी समझ में आ जाता है। लेकिन बेचारे के चप्पल आधे रहते हैं, पीछे से आधे घिसे हुए रहते हैं और सेठ तो साढ़े तीन सौ रुपए के जूते पहनकर घूमते हैं, फिर भी बेवकूफ होते हैं।

पैसा कमाने के लिए पुण्य की ज़रूरत है। बुद्धि से तो बल्कि पाप बँधते हैं। बुद्धि से पैसे कमाने जाएगा तो पाप बँधेगा। मुझ में बुद्धि नहीं है इसलिए पाप नहीं बँधता। हमारे में एक सेंट परसेन्ट भी बुद्धि नहीं है।

स्वच्छता लक्ष्मी जी को खींच लाती है

हमें ऐसा क्यों सिखाया जाता है कि भगवान के बाद अगर कोई है तो वह स्वच्छता है? यदि आपका या अन्य किसी का घर अगर स्वच्छ नहीं होगा तो क्या आपको वहाँ जाना अच्छा लगेगा या वहाँ आपको आरामदायक महसूस होगा? क्या आपको ऐसी जगह पर जाना अच्छा लगेगा जहाँ सब झगड़ रहे हों? क्या आपको ऐसे व्यक्ति के साथ रहना या उसके साथ समय बिताना अच्छा लगेगा जो हर बात में नकारात्मक हो?

इसका स्वभाविक जवाब "ना" है। इससे हमें पता चलता है कि जब हमें ऐसी जगह और ऐसे लोग पसंद नहीं हैं तो लक्ष्मी जी, ऐसी देवी जो स्वर्ग जैसे सुंदर स्थल पर वास करती हैं, जहाँ हर चीज़ शांतिमय, पवित्र और शुद्ध है, वे ऐसे मलिन स्थल पर क्यों आएँगी, जहाँ झगड़ालू और निराशावादी लोग बसते हैं।

इसलिए शायद लक्ष्मी जी को अपनी तरफ आकर्षित करने का सब से सरल मार्ग यह है कि, हमारे घर या काम की जगह पर स्वच्छता बढ़ानी चाहिए। कई लोगों ने और व्यापारियों ने इस पर अमल किया और उनके यहाँ चारों ओर से धन की वर्षा हुई और जहाँ से सोचा भी न था वहाँ से भी धनलाभ प्राप्त हुआ।

सिर्फ हमारे आसपास सफाई रखने से पैसा मिल जाता है ऐसा नहीं है बल्कि हमारे मन, वचन और काया की शुद्धता से ही लक्ष्मी जी खिंची चली आती हैं।

ज्ञानी विद यूथ

इच्छा करने से तो अंतराय पड़ते हैं।
निरीच्छक बनेगा तो लक्ष्मी जी अपने आप छलकेगी

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी की हूँफ (सहारा) बहुत लगती है। यदि लक्ष्मी नहीं होगी तो कैसे रहूँगा? यह सोचकर ही बुखार आ जाता है, अगर रुपक में आएगा तो क्या होगा?

पूज्यश्री : इसलिए आप जागृति रखो। अटैक आया हो और लक्ष्मी के ढेर हों तो अटैक ठीक हो जाएगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो ठीक नहीं होगा।

पूज्यश्री : कोई भी दर्द अशाता उत्पन्न करे तो लक्ष्मी उसे नहीं मिटाती। यानी इसमें संक्षिप्त बात इतनी सी है कि पुण्य का उदय होगा तभी लक्ष्मी आएगी और किसी भी प्रकार के दुःख नहीं रहेंगे। पुण्य समाप्त हो जाएगा तो लक्ष्मी चली जाएगी और दुःख आएँगे। लक्ष्मी से सुख नहीं है, हमारे पुण्य से सुख है और हमारे पाप-कर्मों के कारण दुःख है। बाकी पुण्य का उदय हो और अगर लक्ष्मी न भी हो फिर भी संतोषी सदा सुखी रहता है। कम लक्ष्मी हो, लेकिन तबियत अच्छी हो, वाइफ अच्छी हो, बच्चे अच्छे हों, खाना-पीना चलता रहे, तो कम लक्ष्मी में भी वह संतोषी और सुखी रहता है। ऐसा हो सकता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा हो सकता है।

पूज्यश्री : हमें ऐसी सेटिंग करनी है कि हम लक्ष्मी जी के आधार पर नहीं है, वास्तव में आत्मा के आधार पर हैं। हम विनाशी अवलंबन ले रहे हैं, और वह अवलंबन फिर कभी न कभी चला जाएगा। अतः खुद का जो हमेशा के लिए स्थिर अवलंबन है, स्वरूप का अवलंबन है, उसे पकड़ो। पुण्य के कारण लक्ष्मी आती है। पुण्य खतम हो जाएगा तो लक्ष्मी चली जाएगी। हमें उसके आधार पर नहीं जीना है, आत्मा के आधार पर जीना है लक्ष्मी अगर चली जाएगी, फिर भी हमारे पास ज्ञान तो है, उस ज्ञान के सहारे जी लेंगे और लक्ष्मी जी का नियम कैसा है कि, "जिसका क्लेश खतम हो गया है, जिसे कोई इच्छा ही नहीं है, जो लक्ष्मी का विचार भी नहीं करता, उसके यहाँ लक्ष्मी छलकती है।"

इच्छा करने से तो अंतराय पड़ते हैं। निरीच्छक बनेगा तो लक्ष्मी अपने आप छलकती रहेगी। लक्ष्मी जी से जो सुख शांति, सहुलियत, संपत्ति एवं सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं, वे सारी ज़रूरतें निरीच्छक दशा वाले की बिना लक्ष्मी के ही पूरी हो सकती हैं।

आपके यहाँ बच्चे का जन्म होता है और उसके पास अगर लक्ष्मी हो तो वह बेचारा उसे छूएगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसे ज़रूरत नहीं है।

पूज्यश्री : नहीं, वह सोचता ही नहीं है। उसे खाना-पीना, नहाना-धोना, कपड़े सब अच्छी तरह से मिलता ही रहता है। उसका पुण्य उसे सब देता है। पापा के पास लक्ष्मी नहीं हो तो भी पापा ही संभालते हैं, पैसा नहीं हो फिर भी बच्चे को सब मिलता ही रहता है। अतः पहचानो कि लक्ष्मी है क्या, कौन से आधार पर आती है, कौन से आधार पर खर्च होती है, कौन से आधार पर चली जाती है और लक्ष्मी पधारने के कायदे कौन-कौन से हैं? जितना दोगे उतना आएगा। जितना संभालकर रखोगे, उतना खो दोगे, यह कायदा है। भले ही दस में एक दो, दिया यानी आपके पास आने की जगह खोल दी।

AKRAMPEDIA

नाम - आयुष मेहता
उम्र - १८

यह कहानी मेरी एक ऐसी दोस्त की है जिसके जीवन को मैंने बहुत बारीकी से देखा है। ऐसी दोस्त, जो सिर से पाँव तक कर्ज़ में डूबी है।

सपने कौन नहीं देखता? मेरी दोस्त ने भी देखे थे। मैंने "थे" शब्द इस्तेमाल किया है, क्योंकि आज उसके वे सपने, दुःस्वप्नों में बदल गए हैं। अभी तो वह अपने जीवन में मुश्किल से स्थिर हुई ही थी, कि अब तो वह हताशा में डूब गई है। इन सभी की शुरुआत वेल्स, इंग्लैंड पढ़ाई करने जाने के सपने से हुई। मध्यमवर्गीय होने के कारण अपने सपने को पूरा करने के लिए, उसे खुद ही पैसों का इंतज़ाम करना था। फिर उसे, विद्यार्थियों को मिलने वाले लोन के बारे में पता चला, इससे उसके सपने को और गति मिल गई। जब उसे लोन मिल गया तब उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। लेकिन दोस्तों, यहाँ मुझे यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि ऐसा लोन मिलने के बाद उसे एक निश्चित समय के अंदर वापस चुका देने की ज़िम्मेदारी होती है, जबकि आपके पास कमाई का कोई साधन भी नहीं होता।

पैसे मिलने के बाद, जल्दी ही वह इंग्लैंड चली गई। अपने कोर्स की फीस भर दी और नए अभ्यास में जुड़ गई। लेकिन इन सब के दौरान उसे शॉपिंग करने का नया शौक लग गया, यह शौक बहुत भारी पड़ता है, खास करके ऐसी लड़की के लिए जो अपनी ज़रूरतों का खर्चा ही मुश्किल से निकाल रही हो। इस नए शौक के लिए उसे एक उपाय मिल गया, उसे पता नहीं था कि यह नया उपाय उसके लिए जहर के समान बन जाएगा। उसे एक क्रेडिट कार्ड मिल गया और कहने की ज़रूरत नहीं है कि इसी से सारी बर्बादी हुई। क्रेडिट कार्ड से खरीदारी करना, कर्ज़दार बनने का सब से आसान तरीका है, खास तौर पर जब उसका व्याज भरना पड़ता है। यह स्थिति शायद जीवन के अंत तक भी चल सकती है। मेरी वह दोस्त संयोगवशात् इसी स्थिति की शिकार बन गई। कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था इसलिए उसने थोड़े पैसों की मदद माँगने के लिए मुझ से संपर्क किया। जब उसने कहा कि उस पर लगभग ७५ लाख का कर्ज़ है, तब यह सुनते ही मेरे तो होश ही उड़ गए। वैभवशाली जीवनशैली भोगने के लिए बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ती है। एक विद्यार्थी के तौर पर मैं उसकी एक लाख से ज्यादा मदद कैसे कर सकता हूँ? मुझे अपने खर्चे भी देखने पड़ते हैं। उसके लिए तो १ लाख भी महत्व के थे, इसलिए उसने १ लाख लेने का तय किया। जितनी हो सके उतनी जल्दी वह पैसे मुझे वापस मिल जाएँगे ऐसी आशा से मैंने उसे पैसे दे दिए। समय बीतता गया। उसकी ओर से मुझे कुछ रिस्पोन्स नहीं मिला। मैं यह जानने के लिए बेचैन था कि उसने

अपना कर्ज़ा चुका दिया होगा या नहीं, थोड़े आघात और हताशा से मैंने उसे फोन किया, सामने से मुझे उसकी टूटी-फूटी आवाज़ सुनाई दी, हमने थोड़ी बातें की, फिर उसने मुझे बताया कि पैसे चुकाने के लिए उसे कितना संघर्ष करना पड़ रहा है। उस पर कर्ज़ का पहाड़ बन गया है। उसकी कमाई का ज्यादातर हिस्सा कर्ज़ चुकाने में ही जाता है। इतना ही नहीं वह अपना पुराना कर्ज़ चुका नहीं पाती थी और दूसरे ही महीने वह नए कर्ज़ के चक्कर में फँस जाती। इससे उसकी इज़्ज़त भी खराब हो गई थी।

जब किसी को कुछ मिले तब वह बहुत खुश हो जाता है, लेकिन जब उसे चुकाने का वक्त आता है तब इन्सान का

पसीना छूट जाता है। उसकी आवाज़ से मुझे पता लग गया कि वह हताश हो चुकी है, फिर भी एक योद्धा की तरह लड़ रही है। मुझे पता है कि वह वापस अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। इस पर विश्लेषण करने के लिए मैंने उसे कॉफी पर बुलाया। अड़ालज में आप्तपुत्री बहन को फोन करके यह दुःखद घटना बताई। सारी बात सुनकर उन्होंने मुझे दादा भगवान द्वारा बताए गए वाक्य पढ़कर सुनाए -

...तो कर्ज़ चुका सकते हैं

और फिर भी नियम ऐसा है कि पैसे लेते वक्त ही तय करना चाहिए कि मुझे इसके पैसे लौटा देने हैं, ऐसा तय करके लेने चाहिए। फिर हर चार दिनों के बाद उस पर ध्यान देना चाहिए कि जल्द से जल्द यह पैसा लौटा सकूँ ऐसी भावना करनी चाहिए। अगर ऐसी भावना होगी तो ही पैसा लौटाया जा सकेगा, वर्ना राम तेरी माया।

रुपए-बुपए देने नहीं चाहिए। ये सभी जो कर्ज़ा करते हैं न, वे पैसा लौटाने के लिए किसी और से पैसा ले आते हैं। एक से दस हजार लेते हैं और अगले के पाँच हजार वापस दे देते हैं। फिर किसी और से लेकर इसके वापस दे देते हैं। ऐसा-वैसा करके चक्कर चलाते रहते हैं। अंत में रोने बैठते हैं।

दादा भगवान
सचित्र कथा

वृक्ष की विशालता उसके बीज में ही समाई रहती है। दादा अपने आसपास कैसे बीज बिखेरते होंगे?

साधारण लेकिन स्पष्ट प्रश्न... युवा अंबालाल ने इन सभी प्रश्नों के उत्तर कैसे ढूँढे?

बन रहे हैं एक अनुपम व्यक्ति।

प्रतिदिन बनने वाली घटनाओं पर से समझ बढ़ती है। दादा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में कैसा बरताव करते थे?

साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा ज्ञानी किस तरह भिन्न होते हैं? ऐसा क्या है जो उन्हें विशेष बनाता है? उनके दैनिक जीवन में घटीत हुई घटनाएँ पढ़ें।

ये पुस्तकें आप
Store.dadabhagwan.org
पर से प्राप्त कर सकते हैं।

ठहरो और सोचो!

चलो एक छोटी कसौटी (जाँच) करें ताकी पता चले कि हम कहाँ खड़े हैं।
हर एक वाक्य की जाँच करें कि क्या ऐसा हमने किया है या अभी भी कर रहे हैं?

१) माता-पिता के पैसों का महत्व समझे बिना बेकार मनोरंजन या बेकार की मौजमजा में पैसे व्यर्थ खर्च कर दिए हों।

२) गलत कारणों के लिए पैसों की लालचभरी तृष्णा हो।

३) अनावश्यक कारणों या गैरज़रूरी इच्छाओं को पूरी करने के लिए दोस्तों या रिश्तेदारों से लोन लिया हो।

४) घर या काम की जगह पर स्वच्छता न रखी हो।

५) माता-पिता या भाई-बहनों के साथ निरंतर क्लेश करके, घर में अशुद्ध और क्लेशमय वातावरण बना रखा हो।

६) मन-वचन या काया से चोरी की हो (माता-पिता या दोस्तों की कुछ भी चीज़ों की चोरी करने का सोचना या मन से चोरी कर लेने की वृत्ति रखना)

७) मन-वचन-काया की प्योरिटी (शुद्धता) न रखी हो (मन - नकारात्मक सोचना, वचन - शब्दों का दुरूपयोग करना, गालियाँ देना या किसी का अपमान करना, काया - मारा-मारी पर उतर आना।

देखो, हम सभी जानते हैं कि लक्ष्मी जी के नियमों का पालन हम कितनी निष्ठापूर्वक करते हैं या नहीं करते।

नए सिरे से शुरुआत

हम सभी जानते हैं कि हम कहाँ खड़े हैं, हमें समझना चाहिए कि हमने जहाँ-जहाँ लक्ष्मी जी के नियमों का उल्लंघन किया है, वहाँ कौन से कदम उठाने चाहिए। अगर हम नीचे दिए गए निर्देषों का पालन करेंगे तभी नए सिरे से शुरुआत कर सकेंगे।

1) माता-पिता की कड़ी मेहनत के पैसे गलत मौज-मज़ा में खर्च करने की जो गलती की है उसके प्रतिक्रमण करने चाहिए। अपने माता-पिता और खुद को भी वचन दो कि, ऐसी गलती फिर से नहीं करूँगा।

2) भगवान के दिखाए गए मार्ग पर चलो। जब आप भगवान के परम भक्त बनोगे तब पैसा खुद आपके पीछे आएगा।

3) अपने सभी कर्ज़दारों के लिए अच्छा सोचो और भगवान से प्रार्थना करो कि आप जल्द से जल्द उनके पैसे लौटा सकें और तब तक उनकी शारीरिक और आर्थिक स्थिति अच्छी रहे ऐसी भावना रखो।

4) अपने घर और काम की जगह पर स्वच्छता रखो।

5) अपनी भूलों का बचाव मत करो, घर में क्लेश-कलह न करते हुए पवित्र वातावरण रखो।

6) चाहे कैसी भी आर्थिक तंगी हो लेकिन मन-वचन-काया से चोरी तो करनी ही नहीं है, ऐसा दृढ़ निश्चय करना चाहिए और अंत:करण से इस निश्चय का पालन करना चाहिए।

7) मन-वचन-काया से प्योरिटी रखनी चाहिए।

जब इन निर्देषों का हम पालन करेंगे, तब नए सिरे से शुरुआत होगी। वर्ना पहले जो लक्ष्मी जी के नियमों का उल्लंघन किया है न, वह मिटेगा नहीं।

पज़ल हल करो

१) कुल आठ गोलियाँ हैं। उनका साइज़ और रंग एक सरीखा ही है। इनमें से एक गोली का वज़न अन्य सभी गोलियों से थोड़ा ज्यादा है और वह जहरीली है। आपके पास जो वज़न का तराजू है उसका उपयोग आप "दो" ही बार कर सकते हैं।
तो आप जहरीली गोली को कैसे ढूँढोगे?
संकेत (हिंट) - पहले, कोई भी छः गोलियों को लेकर उनका तीन-तीन का ग्रुप बना लो।

२) अरुण ने टेनिस बॉल को थोड़ी ही दूरी पर ऐसे फैंका कि बॉल कुछ दूरी पर बिल्कुल रुक गया और फिर अपने आप वापस आ गया। उसने किसी चीज़ से बॉल को टकराया था या किसी चीज़ से बाँधा था। तो वह, ऐसा कौन सी युक्ति से कर पाया?

३) एक ट्रेन एक घंटे में मुंबई से अहमदाबाद जाने के लिए ८५ k.m. की रफ्तार से चलती है। दो घंटे बाद दूसरी ट्रेन अहमदाबाद से मुंबई जाने के लिए १०० k.m. की रफ्तार से चलती है। मान लो कि मुंबई और अहमदाबाद के बीच ५०० k.m. का अंतर है।
तो दोनों ट्रेन कहाँ मिलेंगी? कौन सी ट्रेन मुंबई के करीब होगी?
संकेत (हिंट) - "किसका वज़न ज्यादा होगा - ५ k.g. पंख का या ५ k.g. सोने का?" इसका जैसा जवाब होगा वैसा ही जवाब ऊपर की पज़ल का भी होगा।

१) जवाब - पहले, किन्हीं भी छः गोलियों को लेकर उनके तीन-तीन के ग्रुप बना लें। हर एक ग्रुप को तराजू के दोनों ओर रखो। दो संभावनाएँ हैं :
- अगर तराजू संतुलित रहता है तो बाकी बची हुई दो में से एक गोली भारी होनी चाहिए।
- अगर तराजू संतुलित नहीं रहता तो दो में से एक ग्रुप ज्यादा भारी है। अब भारी वाले ग्रुप में से किसी भी दो गोलियों का वज़न करो, अगर एक गोली दूसरी गोली से भारी है तो जहरीली गोली मिल जाएगी। अगर दोनों का वज़न बराबर है तो तीसरी गोली (जिसका आपने दूसरी बार वज़न नहीं किया है) वह गोली जहरीली है।
२) जवाब - उसने बॉल को हवा में सीधा ही उछाल दिया था।
३) जवाब - मुंबई और अहमदाबाद की ट्रेन जब मिलेंगी तब मुंबई से बराबर की दूरी पर ही होंगी।

समर कैम्प - २०१७

१० शहरों में समर कैम्प का आयोजन हुआ जिसमें १३-२१ वर्ष की लगभग ९३० युवा बहनों ने हिस्सा लिया - उसकी और झलक देखिए - youth.dadabhagwan.org *पर।*

सेन्टर	संख्या
अहमदाबाद	५६
भरूच	८९
गांधीधाम	३५
मुंबई	५५
राजकोट	५८
सीमंधर सिटी	३४०
सूरत	५४
सुरेन्द्रनगर	२८
बड़ौदा	४५
आणंद	१७०

जुलाई २०१७
वर्ष : ५, अंक : ०३
अखंड क्रमांक : ५१

अक्रम यूथ

लक्ष्मी लिमिटेड है

और लोगों की माँग

अनलिमिटेड है।

- दादाश्री

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, K6 Road, Electronics GIDC, Sector 25, Gandhinagar - 382044, Gujarat, India